Toppersnotes
Unleash the topper in you

हरियाणा

P.G.T.

हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)

भाग - 1

राजनीतिक सिद्धान्त एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

राजनीतिक सिद्धान्त		
राजनीतिक सिद्धान्त और अवधारणाएं		
1.	अर्थ एवं इसकी उपयोगिता	1
	• अवधारणाएँ (Concepts)	1
2.	अधिकार (Rights)	4
3.	स्वतंत्रता (Liberty)	11
4.	समानता (Equality)	25
5.	न्याय (Justice)	36
6.	धर्मनिरपेक्षता (Secularism)	42
7.	परम्परागत और आधुनिक परिपेक्ष्य/दृष्टिकोण	45
8.	राज्य	50
	• प्रकृति, कार्य, सम्प्रभुता, बहुलवाद	52
9.	व्यवहारवाद और उत्तर व्यवहारवाद	63
अन्तर्राष्ट्रीय संगठन		
1.	अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के उपागम	70
2.	राष्ट्र शक्ति एवं राष्ट्र हित	75
3.	अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति : शीतयुद्ध और शीतयुद्ध का अन्त	76
4.	समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व परिदृश्य, उपकरण और चुनौतियाँ	83
5.	अन्तर्राष्ट्रीय संगठन : संयुक्त राष्ट्र संघ (UN)	86
6.	यूरोपीय संघ (EU)	91
7.	आसियान (ASEAN)	94
8.	दक्षेस (SAARC)	96
9.	अल्बा (ALBA)	99
10.	गुट निरपेक्ष आन्दोलन (NAM)	101
11.	भारतीय विदेश नीति : उद्देश्य	104
12.	भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका	109
13.	भारत और गुट निरपेक्ष आन्दोलन	111
14.	भारतीय विदेश नीति के सम्मुख चुनौतियाँ	113
15.	भारत के पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध	114

राजनीतिक सिद्धान्त

अर्थ एवं इसकी उपयोगिता

- राजनीति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु ने किया।
- राजनीति का संबंध मनुष्यों के सार्वजनिक जीवन से है।
- राजनीति एक मानवीय प्रकिया है। यह संघर्ष का परिणाम है।
- राजनीति एक प्रकार की जनसेवा है।
- प्राचीन यूनानी राजनीतिक वैज्ञानिक अरस्तु ने इसे 'Master Science' कहा है।

डेविड ईस्टन के अनुसार

''राजनीति का संबंध समाज में मूल्यों के अधिकारिक आवंटन से है।

- राजनीति शब्द अंग्रेजी के Politics का हिन्दी रूपान्तरण है जिसकी उत्पत्ति यूनानी भाषा (ग्रीक) के पॉलिस (Polics) शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – नगर राज्य।
- प्राचीन यूनान में नगर–राज्यों के नागरिक जीवन का अध्ययन करने वाले विषय को पॉलिटिक्स (राजनीति) कहा जाता था।
- सिद्धान्त शब्द यूनानी शब्द 'A Theoria' से बना है जिसका अभिप्राय एक केन्द्रित मानसिक दृष्टिकोण है जो एक वस्तु के अस्तित्व और उसके कारणों को प्रकट करती है।
- राजनीति के विविध पक्षों के व्यवस्थित अध्ययन को राजनीतिक सिद्धान्त कहा जाता है।

एण्ड्रू हैंकर के अनुसार

''राजनीतिक सिद्धान्त में तथ्य और मूल्य दोनों समाहित है दोनों एक – दूसरे के पूरक हैं।''

- राजनीतिक सिद्धान्त का सरोकार तथ्यों और मूल्यों दोनों से है, उचित और अनुचित की जाँच की जाती है और समाज के लिए उपयुक्त लक्ष्यों नीतियों एवं कार्यक्रमों की संस्तुति की जाती है।
- राजनीति सिद्धान्त के तीन प्रमुख कार्य हैं –
  1. वर्णन
  2. समालोचना
  3. पुनर्निर्माण

नोट – इनमें वर्णन का कृत्य राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आता है। समालोचना और पुनर्निर्माण के कृत्य राजनीति दर्शन के क्षेत्र में आते हैं।

- इस प्रकार राजनीति – सिद्धान्त के दो मुख्य अंग हैं –
  1. राजनीति विज्ञान
  2. राजनीति दर्शन
- राजनीति विज्ञान के जनक अरस्तु है, उनका प्रमुख ग्रंथ 'The Politics' है।
- राजनीति विज्ञान का संबंध तथ्यों तथा यथार्थ से है, जिसमें राजनीति की व्याख्या की जाती है।

- राजनीति दर्शन के पिता प्लेटो है, जिसकी प्रमुख रचना 'The Republica' है।
- राजनीति दर्शन का संबंध मानक, मूल्यों व आदर्शों से है जिसमें समालोचना एवं पुनर्व्याख्या की जाती है।
- राजनीति सिद्धान्त उन विचारों और नीतियों को व्यवस्थित रूप को प्रतिबिम्बित करता है जिनसे हमारे सामाजिक जीवन, सरकार और संविधान ने आकार ग्रहण किया है।
- यह स्वतन्त्रता, समानता, न्याय, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता जैसी अवधारणाओं का अर्थ स्पष्ट करता है।
  - (i) आधुनिक काल में सबसे पहले रूसों ने सिद्ध किया कि स्वतंत्रता मानव मात्र का मौलिक अधिकार है।
  - (ii) कार्ल मार्क्स ने तर्क दिया कि समानता भी उतनी ही निर्णायक होती है जितनी की स्वतंत्रता।
  - (iii) गाँधी जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में वास्तविक स्वतंत्रता या स्वराज के अर्थ की विवेचना की।
  - (iv) अम्बेड़कर ने जोरदार तरीके से तर्क रखा कि अनुसूचित जातियों को अल्पसंख्यक माना जाना चाहिए और उन्हें विशेष संरक्षण मिलना चाहिए।
- इन विचारों ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्वतंत्रता और समानता को महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया।
- भारतीय संविधान के अधिकार वाले अध्याय में किसी भी रूप में छुआछूत का विरोध किया गया।
- गाँधी जी के सिद्धान्तों को नीति–निदेशक तत्वों मे शामिल किया गया।
- राजनीतिक सिद्धान्त ज्ञान तथा राजनीतिक चेतना की वृद्धि का महत्वपूर्ण साधन है।

प्लेटो ने कहा कि, ''ज्ञान ही सद्‌गुण है और सद्‌गुण ही ताकत है।''

- राजनीतिक सिद्धान्त दो प्रकार का होता हैं –
  1. परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त
  2. आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त

परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त

(i) राज्य के अध्ययन के रूप में (ब्लंटशली, गैरिस, गार्नर, गैटेल)

(ii) सरकार के अध्ययन के रूप में (पॉलजैमेट, लिकॉक, सीले)

(iii) राज्य और सरकार के अध्ययन के रूप में (डिमॉक, पॉलजैनेट)

(iv) राज्य, सरकार और व्यक्ति के अध्ययन के रूप में (लॉस्की, हर्मन, हेलर)

- डेविड ईस्टन तथा आमण्ड जैसे आधुनिक राजनीति शास्त्री राजनीति विज्ञान को राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन मानते हैं।
- हर्बर्ट साइमन जैसे विचारक राजनीति विज्ञान को निर्णय निर्माण का विज्ञान मानते हैं। लॉसवेल राजनीति विज्ञान को मूलतः एक नीति विज्ञान मानता है।
- आधुनिक सिद्धान्त के प्रमुख प्रतिपादकों में – डेविड ईस्टन, राबर्ट डहल, चार्ल्स मेरियम, केटिलन, लॉसवेल, आमण्ड ऐप्टर प्रमुख हैं।

नोट – बकल का कथन है कि ''ज्ञान की वर्तमान स्थिति में राजनीति का विज्ञान होना तो दूर रहा, वह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी कला है।''

- राजनीति विज्ञान तथ्यात्मक विज्ञान न होकर एक आदर्शात्मक विज्ञान अवश्य है। इसके प्रमुख समर्थकों मे अरस्तु, बोंदा, हॉब्स, मॉण्टेस्क्यू, ब्राइस, सिजविक, ब्लंटशली, जेलिनेक, डॉ. फाइनर, लास्की, बनार्ड शॉ, फ्रेडरिक पोलक आदि हैं।
- 'राजनीति विज्ञान' का सर्वप्रथम प्रयोग गॉडविन एवं मरे वुल्स्टोन क्राफ्ट ने किया।
- 1948 में यूनेस्को की एक कॉन्फ्रेंस में भी 'राजनीति विज्ञान' शब्द को प्राथमिकता दी गयी।
- अरस्तु ने बहुत पहले ही इसे 'सर्वोच्च विज्ञान', 'स्वामी विज्ञान' या 'आचार्य विज्ञान' तथा 'शीर्षस्थ विज्ञान वाला विज्ञान' कहा।
- प्लेटो जैसे प्राचीन यूनानी विद्वान ने भी अपने ग्रंथ 'स्टेट्समेन' में राजनीति को शासन की एक श्रेष्ठ कला के रूप में चित्रित किया है।
- कैटलिन और लासवेल – राजनीति विज्ञान को कला व विज्ञान दोनों का संगत मानते हैं।
- राजनीति सिद्धान्त का मुख्य विषय राज्य और सरकार है।
- राजनीतिक आन्दोलनों के पीछे सदैव एक विचारधारा का हाथ रहा है। अब तक जितने भी राष्ट्रीय आन्दोलन हुए तथा समाज में क्रांतियाँ लाई गयी, उन सबके पीछे राजनीतिक सिद्धान्तों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- राजनीतिक सिद्धान्त वैज्ञानिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करने में सहायक होता है।
- राजनीतिक सिद्धान्त राजनीतिक आन्दोलनों में सहायक होते हैं।
- सामाजिक परिवर्तन को समझने और उसकी व्याख्या करने में राजनीतिक सिद्धान्त सहायक होते हैं।
- राजनीतिक सिद्धांत शासन प्रणालियों के लिए वैद्यता प्रदान करते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अधिकार (Rights)

- अधिकार लोकतंत्र की मूल मान्यता है और यह परम्परागत दृष्टिकोण से संबंधित है।

अर्थ

- अधिकार आत्म विकास के वे दावे हैं जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त तथा राज्य द्वारा समर्थित है।
- ''अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितियाँ है जो व्यक्ति के पूर्व विकास के लिए आवश्यक है।''– **लास्की**
- ''आज के नैतिक दावे कल के अधिकार है।''– **ग्रीन**

नोट – ग्रीन अधिकारों को बाह्य स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित करता है।

विकास

नैतिक अधिकार → नागरिक अधिकार → राजनीतिक अधिकार → सामाजिक आर्थिक अधिकार → सांस्कृतिक अधिकार → पर्यावरणीय अधिकार

Trick-
नै ना रा सा सांप

अधिकारों का वर्गीकरण

1. नकारात्मक/सकारात्मक अधिकार
2. मौलिक/संवैधानिक अधिकार/कानूनी अधिकार
3. नरम/कठोर अधिकार
4. नागरिक/मानवीय अधिकार

1. नकारात्मक/सकारात्मक अधिकार

नकारात्मक अधिकार
राज्य द्वारा कोई प्रतिबंध नहीं
जैसे – विचार/अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
↓
पूँजीवादी राज्य में
कानूनी/राजनैतिक

सकारात्मक अधिकार
राज्य द्वारा सहायता
जैसे – शिक्षा का, स्वास्थ्य का, रोजगार का अधिकार
↓
समाजवादी राज्य में
सामाजिक/आर्थिक

कानूनी/राजनैतिक → + ← सामाजिक/आर्थिक

नकारात्मक + सकारात्मक = कल्याणकारी

2. मौलिक अधिकार/संवैधानिक अधिकार/कानूनी अधिकार

मौलिक अधिकार	संवैधानिक अधिकार	कानूनी अधिकार
• जैसे– भारतीय संविधान के भाग III में	• संविधान में उल्लेख परन्तु वाद योग्य नहीं	• जिनका उल्लेख संविधान में प्रत्यक्ष रूप में नहीं होता हैं।
• सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संरक्षण	• जैसे – भाग IV में	• संसदीय अधिनियम द्वारा निर्मित हैं।
• वाद योग्य होते हैं।	• सभी मूल अधिकार संवैधानिक अधिकार है लेकिन सभी संवैधानिक अधिकार मूल अधिकार नहीं हैं।	• सूचना का अधिकार • सम्पत्ति का अधिकार

3. नरम/कठोर अधिकार

नरम अधिकार
↓
नकारात्मक

कठोर अधिकार
↓
सकारात्मक

4. नागरिक/मानवीय अधिकार

नागरिक अधिकार
↓
केवल नागरिक होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकर
जैसे – (अनु. 15, 16, 19, 29, 30)

मानवीय अधिकार
↓
मानव होने के नाते प्राप्त होने वाले अधिकार
जैसे – भारतीय + विदेशी
(अनु. 14, 17, 18)
मानवाधिकार मूल अधिकार नहीं है मूल अधिकार मानवाधिकार है।

अन्य प्रकार से बँटवारा

- नैतिक अधिकार
- नागरिक अधिकार
- राजनीतिक अधिकार
- सामाजिक आर्थिक अधिकार
- सांस्कृतिक अधिकार
- पर्यावरणीय अधिकार

1. नैतिक अधिकार

- बुजुर्गों, बच्चों की देखभाल का अधिकार
- शिक्षक को सम्मान पाने का अधिकार

2. नागरिक अधिकार

- कानून के समक्ष समानता का अधिकार
- जीवन का अधिकार
- विचार/अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
- संपत्ति का अधिकार
- धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

3. राजनीतिक अधिकार

- लोकतंत्रीय/उदारवादी व्यवस्थाओं में
- वोट देने का (एक व्यक्ति, एक वोट, एक मोल – बेंथम)
- चुनाव लड़ने का अधिकार
- सार्वजनिक नियुक्ति पाने का अधिकार
- सरकार का विरोध या समर्थन करने पर अधिकार
- सार्वजनिक नीति–निर्माण व कार्यों में सहभागिता का अधिकार

4. सामाजिक–आर्थिक अधिकार

- समाजवादी – कल्याणकारी व्यवस्थाओं में
- (रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार)

5. सांस्कृतिक अधिकार

- बहुसंस्कृतिवादी
- अपनी भाषा, लिपि व संस्कृति का अधिकार

6. पर्यावरणीय अधिकार

- वर्तमान में ज्वलंत मुद्दा
- शुद्ध हवा, शुद्ध पर्यावरण, परमाणु मुक्त विश्व

अधिकारों के सिद्धान्त

प्राकृतिक अधिकार सिद्धान्त	विधिक सिद्धान्त	सामाजिक उपयोगिता/कल्याण सिद्धान्त	ऐतिहासिक रूढीवादी सिद्धान्त	समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त	मार्क्सवादी सिद्धान्त	आदर्शवादी सिद्धान्त
हॉब्स लॉक स्पेन्सर थॉमस पेन जैफरसन	हॉब्स बेंथम ऑस्टिन	बेंथम लास्की	बर्क	मैकाइवर		ग्रीन

1. प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धान्त

- ईश्वर प्रदत्त, राज्य से पूर्व छीने नहीं जा सकते हैं।
- राज्य का निर्माण अधिकारों की रक्षा हेतु।
- **समर्थक** –
  - हॉब्स – आत्म रक्षा का अधिकार
  - लॉक – जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति का अधिकार
  - थॉमस पेन – पुस्तक - Rights of the man common sence
  - जैफरसन – या स्वतंत्रता दो या मौत दो।
- **तीनों क्रान्तियाँ** –
  1. गौरवपूर्व क्रान्ति (1688)
  2. अमेरिकी क्रान्ति (1776)
     - नारा – जीवन स्वतंत्रता, सुख
  3. फ्रांसीसी क्रान्ति – (1789)
     - नारा – स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व
- मानवाधिकार – 10 दिसम्बर, 1948 सार्वभौम घोषणा
- आर्थिक क्षेत्र में – एडम स्मिथ, माल्थस, रिकार्डो
- आलोचना
  - कट्टर आलोचक – बेंथम
  - ''प्राकृतिक अधिकार बकवास है, बकवासों से बढ़कर बकवास है।''
  - अलंकारिक बकवास/बैसाखियों की बकवास।

2. अधिकारों का विविध/कानूनी सिद्धान्त

- प्राकृतिक अधिकारों का उल्टा।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- अधिकार राज्य की देन है, ईश्वर की नहीं।
- अधिकार विधि या कानून द्वारा समर्थित/सीमित नहीं होते हैं।
- इस सिद्धान्त के अनुसार प्रभुसत्ता राज्य में निहित है और कार्यपालिका उसका प्रयोग करती है। अतः अधिकार कार्यपालिका के आदेश की देन है।
- बेंथम + ऑस्टिन – ''कानून/राज्य सम्प्रभु के आदेश है।''
- एकलवादी प्रभुसत्ता वाले विचारक
  - ऑस्टिन
  - हॉब्स
  - बोंदा
  - जोसेफ रजा आदि।

Tricks–
ओ हो बो जो

3. सामाजिक उपयोगिता/प्रासंगिकता/कल्याण सिद्धान्त

- वे ही अधिकार मान्य जिनकी सामाजिक उपयोगिता हो।
- समर्थक – उपयोगितावादी → बेंथम, मिल
- लास्की – अधिकारों की व्यवस्था समाज कल्याण से जुड़ी है।
- पुस्तक – A Grammar of politics में सकारात्मक अधिकारों पर बल।
- लास्की – किसी भी राज्य की पहचान उन अधिकारों से होती है जिन्हें वह कायम रखता है। (सकारात्मक अधिकार)

सकारात्मक	**नकारात्मक**
• रोजगार (अनु. 21)	भाषण/अभिव्यक्ति
• काम	सीमित/सत्ता
• न्यूनतम मजदूरी (अनु. 43)	सीमित संपत्ति
• उचित वातावरण (अनु. 42)	कानूनी सुरक्षा का अधिकार
• श्रमिकों के प्रबन्धन का अधिकार अनु. 43 (A)	

नोट – लास्की – मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन करता है।

लास्की – ''अधिकार विहीन राज्य रेत के ढेर के समान है।''

''किसी राज्य की पहचान उसके द्वारा जनता को प्रदान किये गये अधिकारों से होती है।''

- लास्की अपनी पुस्तक "Theory of modern state" में स्वतंत्रता–समानता को पूरक मानता है।

4. अधिकारों का ऐतिहासिक/रूढ़िवादी सिद्धान्त

- **एडमण्ड बर्क** – अधिकार इतिहास की देन है। जब रीति रिवाज/परम्परा लम्बे समय तक प्रचलन में रहते है तो वे स्थिर हो जाते हैं तथा अधिकार बन जाते हैं।
  उदाहरण – पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन संबंधी अधिकार – इस सिद्धान्त में अधिकारों को सामाजिक मान्यता की तो आवश्यकता होती है परन्तु राज्य द्वारा मान्यता आवश्यक नही। **जैसे –** बर्लिन लिखता है कि यह रूढ़ीवादी विचारक मूल्यों के निश्चित मापदण्ड लागू कर राज्य की शक्ति में वृद्धि करते हैं और निरंकुशवाद को बढ़ावा देते है, जबकि मूल्यों की बहुलता होनी चाहिए तभी व्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित रह पाएगी। **(U.K.)**
- **आलोचना** – सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, दास प्रथा, लम्बे समय तक प्रचलन में रहे तथा अधिकार का रूप धारण कर लें तो यह अनुचित है।

5. समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त – मैकाइवर

वे रीति–रीवाज जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त हो तथा जिन्हें राज्य कानून में बदल दे, अधिकार बन जाते हैं।

6. अधिकारों का आदर्शवादी या नैतिक सिद्धान्त –ग्रीन

- पुस्तक – Lectures on the Principal of Political Obligation – ग्रीन

नैतिक संस्था	
उग्र आदर्शवाद	नैतिक आदर्शवाद
राज्य – साध्य	राज्य – साधन
व्यक्ति – साधन	व्यक्ति – साध्य
समर्थक – हीगल, ब्रोसांके, ब्रेडले	समर्थक – ग्रीन व काण्ट

- इनके अनुसार अधिकार राज्य की देन है।

7. अधिकारों का मार्क्सवादी सिद्धान्त

- ''किसी भी राज्य में, किसी भी युग में प्रचलित अधिकार प्रभुत्वशाली वर्ग के अधिकार होते है।'' – मार्क्स
- पूँजीवादी व्यवस्था तथा सर्वहारा के अधिनायक तंत्र (साम्यवाद का आरम्भिक दौर) में अधिकारों का सूत्र
- ''हरेक को अपनी क्षमतानुसार, प्रत्येक को अपनी आवश्यकता के अनुसार''
- मार्क्स अपनी पुस्तक– ''The Jewish Question'' में लिखता है कि ''आर्थिक अधिकार सबसे महत्वपूर्ण है।''
- इसी पुस्तक में मार्क्स व्यक्तिगत सम्पत्ति (रोटी कपड़ा) तथा निजी सम्पत्ति (स्थायी संपत्ति) में अन्तर करता है।

अधिकारों की अवधारणा का विकास

1. मैग्नाकार्टा – 1215 U.K.
2. अधिकारों का घोषणा पत्र – 1689 U.K.
3. अमेरिकी क्रान्ति – 1776
4. फ्रांसीसी क्रान्ति – 1789
5. सयुंक्त राष्ट्र संगठन – U.N.O – 1945
   - 1946 में U.N. मानवाधिकार आयोग की स्थापना की गई। 2006 में इसे समाप्त कर शक्तिशाली 'मानवाधिकार परिषद्' की स्थापना की गई।
   - 10 दिसम्बर, 1948 को मानवाधिकार घोषणा पत्र जारी किया गया। (अनु. – 30) भारतीय विद्वान एस. रामफल की महत्वपूर्ण भूमिका।
   - 1966 में U.N. महासभा में राजनीतिक मानवाधिकार घोषणा–पत्र पारित किया गया।
   - 1969 में नवीन अधिकारों का घोषणा पत्र U.N. महासभा से पारित किया गया।
   - 1973 में मानव हत्या विरोधी अधिनियम U.N. महासभा में पारित किया गया।

क्षेत्रीय स्तर पर प्रयास – विभिन्न क्षेत्रों में अधिकारों की रक्षा के लिए निम्न कानून पारित किये गये।

1. यूरोपीय अधिकार अधिनियम – 1950
2. अमेरिकन अधिकार अधिनियम – 1969
3. हेलसिंकी समझौता – 1975
4. अफ्रीकी अधिकार अधिनियम – 1982

निजी स्तर पर प्रयास

1. रेड क्रॉस सोसायटी – 1859
   - तीन बार नोबेल पुरस्कार – 1911, 1944 और 1963 में
2. एमनेस्टी इंटरनेशनल – 1861 (1977 में नोबेल)
3. बचपन बचाओ आन्दोलन (कैलाश सत्यार्थी 2014 नोबेल)
4. आक्सफेम
5. क्राई
6. आर्टीकल (19)
7. सरवाइवल इंटरनेशनल

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अधिकारों का कार्यात्मक सिद्धान्त – लास्की
- लास्की सेवाधर्मी राज्य का समर्थन करता है।
  - राजनीतिक अधिकार – उदारवादी
  - आर्थिक अधिकार – समाजवादी
- नॉजिक के अनुसार, अधिकारों का प्रमुख स्त्रोत ''आत्म स्वामित्व के प्राकृतिक अधिकार'' का नियम है। जिसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप में एक साध्य माना जाये।

स्वतंत्रता (Liberty)

- स्वतंत्रता लोकतंत्र की मूल मान्यता है।
- स्वतंत्रता शब्द लैटिन शब्द लिबर (Liber) से बना है जिसका अर्थ है– बंधनों का अभाव (नकारात्मक स्वतंत्रता)

नोट – अतार्किक बंधनों का अभाव (सकारात्मक स्वतंत्रता)

- स्वतंत्रता का विचार आधुनिक युग की देन है। यूनानी व मध्यकाल में यह विचार अनुपस्थित था।
- **सीले –**''स्वतंत्रता अतिशासन की विलोम है।''
- **डी.डी. मैक्कीन–** (सकारात्मक स्वतंत्रता का समर्थक)– ''स्वतंत्रता अतार्किक प्रतिबंधों का अभाव है न कि सभी प्रतिबंधों का।''

  नोट
  - अगर हम स्वतंत्रता को प्रतिबंधों के अभाव के रूप में स्वीकार करते हैं तो यह 'प्राकृतिक स्वतंत्रता' होगी जिसका तात्पर्य होगा – 'जंगल की स्वतंत्रता'
  - स्वतंत्रता का यह विचार स्वीकार करते ही हम हॉब्स द्वारा कल्पित प्राकृतिक अवस्था की स्थिति में पहुँच जायेंगे।
- **एल. टी. हाब हाऊस –** ''सबको स्वतंत्रता तभी प्राप्त हो सकती है। जब सब पर कुछ न कुछ प्रतिबंध लगा दिये जाये।''
- स्वतंत्रता का विचार पूँजीवाद व उदारवाद के साथ निकट से जुड़ा हुआ है।
- सर्वप्रथम उदारवाद के जनक जॉन लॉक ने स्वतंत्रता को एक 'प्राकृतिक अधिकार' बताया था।
- जॉन लॉक के इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर अमेरिकी क्रान्ति (1776) हुई जिसमें स्वतंत्रता पर बल दिया गया।
- स्वतंत्रता की अवधारणा विकसित देशों में अधिक प्रभावी।

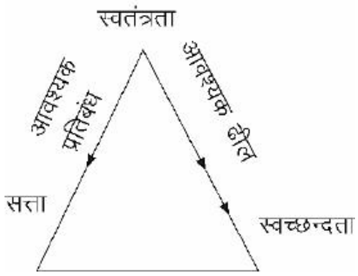

स्वतंत्रता के प्रकार/रूप

1. औपचारिक/नकारात्मक/प्रक्रियात्मक स्वतंत्रता (रात्रि प्रहरी, पुलिस राज्य)
2. अनौपारिक/सकारात्मक/तात्विक स्वतंत्रता

औपचारिक/नकारात्मक/प्रक्रियात्मक स्वतंत्रता	**अनौपारिक/सकारात्मक/तात्विक स्वतंत्रता**
• योग्यता पर बल + आरक्षण का विरोध	• योग्यता + आरक्षण पर बल
• राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र पर बल	• कल्याणकारी राज्य की अवधारणा
• राजनैतिक/कानूनी स्वतंत्रता	• सामाजिक/आर्थिक स्वतंत्रता
• समर्थक – उदारवादी, पूँजीवादी	• समर्थक – समाजवादी उदारवादी
• परम्परागत/नकारात्मक उदारवादी (नकारात्मक स्वतंत्रता)	• सकारात्मक/आधुनिक उदारवादी (सकारात्मक स्वतंत्रता)
• लार्ड एक्टन, डी टॉकविले, जेम्स ब्राईस, जॉन लॉक, एडम स्मिथ, स्पेन्सर	• लास्की, टॉनी, कीन्स, हॉब हाऊस, मैकाइवर
• स्वेच्छातंत्रवादी – नॉजिक, हैयक आइजिया बार्लिन, फ्रीडमैन	• आदर्शवादी – काण्ट, हीगल, ग्रीन ब्रैण्डले, बोसांके • समतावादी – डार्किन, रॉल्स सी.वी. मैक्सफर्सन, अमर्त्य सेन • मार्क्सवादी – नव मार्क्सवादी

नोट – स्वतंत्रता में भेद करने वाला – आइजिया बर्लिन
स्वतंत्रता में भेद नहीं करने वाला – जॉन रॉल्स

- नकारात्मक स्वतंत्रता – यह स्वतंत्रता व समानता की विरोधी है।
- सकारात्मक स्वतंत्रता – यह स्वतंत्रता व समानता को एक दूसरे की पूरक मानती है।
- परम्परागत/नकारात्मक/औपचारिक/प्रकियात्मक स्वतंत्रता रात्रि प्रहरी तथा पुलिस राज्य का समर्थन।

1. **एडम स्मिथ –** ये मूलतः अर्थशास्त्री थे।
   - इन्होंने ''वेल्थ ऑफ नेशन्स (1776) पुस्तक में व्यापारवाद तथा वाणिज्यवाद का समर्थन किया।
   - इनका कहना था कि राज्य को व्यक्ति के व्यापार व संपत्ति पर कर नहीं लगाना चाहिए अर्थात् नकारात्मक स्वतंत्रता।
   - स्मिथ ने, 'अदृश्य हाथ' का विचार दिया।
2. **जॉन लॉक –** पुस्तक – Second Treatise on Civil Government (नागरिक सरकार पर दूसरा ग्रंथ) 1689 में व्यक्ति को तीन प्राकृतिक अधिकार सौंपता है – (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) जिस पर राज्य को कोई प्रतिबंध नही लगाना चाहिए।
   '' जहाँ विधि नही, वहाँ स्वतंत्रता नहीं।'' – लॉक

3. स्पेन्सर – मूलतः जीव शास्त्री

- जो लेमार्क से प्रभावित होकर 'योग्यत्तम की विजय'/'योग्यत्तम की उत्तर जीविता' को सामाजिक क्षेत्र में लागू करता है अर्थात् समाज में केवल योग्य व्यक्तियों को ही जीने का अधिकार हो।
- विकलांगों, वृद्धों, बीमारों को पहाड़ से नीचे फेंक देना चाहिए।
  - यह राज्य को ''स्टॉक एक्सचेंज कंपनी'' कहते है कि – हर्बर्ट स्पेन्सर इसलिए राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र का समर्थन।
  - राज्य उत्पत्ति के 'सामाजिक समझौते सिद्धान्त' का समर्थन हॉब्स, लॉक, रूसो, बन्द्रा द जुवेनल की भाँति कौटिल्य स्पेन्सर भी करते हैं।
  - स्पेन्सर अधिकारों को दो भागों में बाँटता हैं –

    (1) निजी – (सम्पत्ति का अधिकार)

    (2) सार्वजनिक

    - निजी अधिकार को अर्थिक महत्वपूर्ण मानता है। इसी में संपत्ति के अधिकार को शामिल करता है।
    - अपनी पुस्तक – Man v/s State - 1884 (स्पेन्सर) में राज्य के जैविक सिद्धान्त का भी समर्थन करता है अर्थात् राज्य शरीर, व्यक्ति–अंग मात्र है।
    - इसी सन्दर्भ में बार्कर लिखता है– ''स्पेन्सर के विचारों में विरोधाभास पाया जाता है।'' यह एक तरफ राज्य के न्यूनतम कार्यक्षेत्र का समर्थन करता है।

    नोट – ''राज्य इसलिए विद्यमान है क्योंकि समाज में अपराध विद्यमान है।'' – स्पेन्सर

    - लॉक की तरह रात्रि – प्रहरी राज्य का समर्थन
    - रात्रि प्रहरी राज्य के तीन कार्य –
      1. बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा
      2. शान्ति व्यवस्था बनाए रखना
      3. न्याय

4. डी टॉकविले – मूलतः फ्रांसीसी विचारक

- पुस्तक – "Democracy in America" (अमेरिका में लोकतंत्र)
- समानता से स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है।
- समानता के लिए स्वतंत्रता को समाप्त नहीं किया जा सकता है।
  - **टॉकविले** – ''यदि समानता गेट से आती है तो स्वतंत्रता खिड़की से उड़ जाती है।''
  - पुस्तक - ओल्ड फ्रेंच रिवोलेशन – में फ्रांसीसी क्रान्ति की आलोचना तथा अमेरिकी क्रान्ति की प्रशंसा में कहता है कि फ्रांसीसी क्रान्ति ने समानता पर बल देकर स्वतंत्रता को नष्ट कर दिया।

5. लार्ड एक्टन – डी टॉकविले से प्रभावित

- **पुस्तक -** हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम एण्ड अदर एसेज (1877) में लिखता है कि समानता व आरक्षण की अवधारणा राज्य की शक्ति में वृद्धि करती है, इससे भ्रष्टाचार में वृद्धि होती है।
- एक्टन – ''सत्ता भ्रष्ट होती है तथा पूर्ण सत्ता पूर्ण भ्रष्ट होती है।''

Toppersnotes
Unleash the topper in you

6. जेम्स ब्राईस

- पूर्ण समानता असम्भव
- यह आर्थिक समानता की विशेष रूप से आलोचना
- स्वतंत्रता – समानता परस्पर विरोधी

7. मिल

पुस्तक - Assays on Liberty (हानि का सिद्धान्त)

- व्यक्ति अपने मन व शरीर का स्वामी है।
- स्वतंत्रता को सीमित करने वाला– बहुसंख्यक समाज है। राज्य या सरकार नहीं।

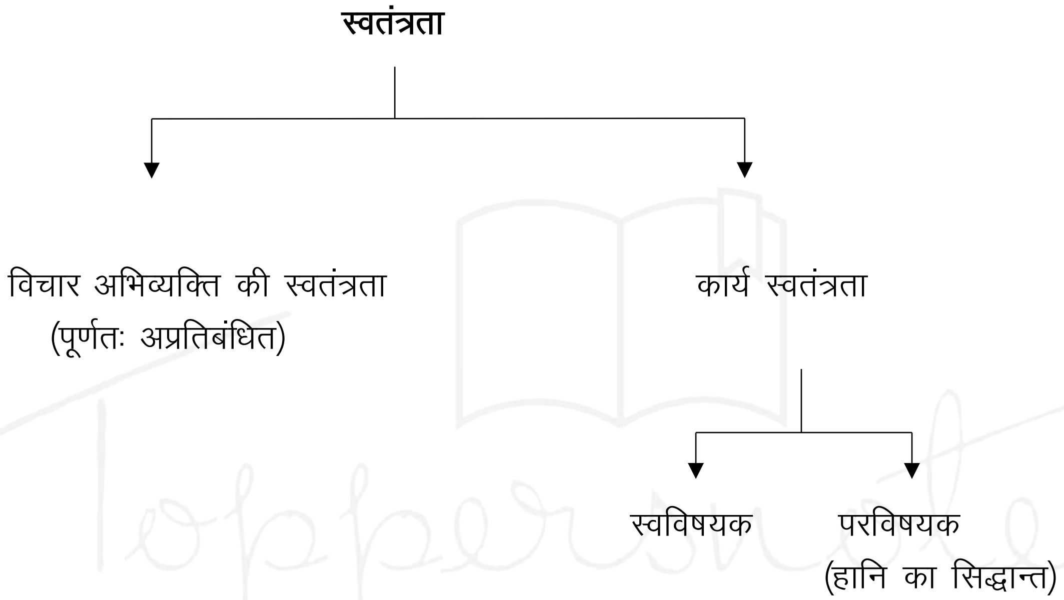

स्वेच्छातंत्रवादी

- (औपचारिक न्याय पर बल)
- योग्यता का समर्थन, आरक्षण का विरोध

आइजिया बार्लिन

पुस्तक – Two concepts of Liberty – 1958
Four Assays on Liberty – 1969

बर्लिन के विचार

1. स्वतंत्रता संबंधी विचार

- प्रतिबंधों का अभाव के रूप में स्वतंत्रता को परिभाषित करने वाला विचारक – बर्लिन
- राज्य केवल नकारात्मक स्वतंत्रता दे सकता है, सकारात्मक स्वतंत्रता नहीं। इसके बावजूद कोई व्यक्ति प्रगति नहीं कर सकता तो उसकी कमी है।
- बर्लिन – ''यदि कोई व्यक्ति पक्षी की तरह उड़ व मछली की तरह तैर नहीं सकता तो उसकी अपनी कमी है।''

Toppersnotes Unleash the topper in you

- आरक्षण व समानता लाने के प्रयास मे स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।
    - बर्लिन का प्रसिद्ध कथन है – ''स्वतंत्रता, स्वतंत्रता है जो है सो है, इसकी पूर्ति कोई दूसरा नहीं कर सकता।''
    - स्वतंत्रता, समानता, न्याय, संस्कृति, मानवीय मूल्य की पर्याय नहीं हो सकती

      नोट – बर्लिन को 'आंशिक स्वेच्छातंत्रवादी' कहा जाता है क्योंकि बर्लिन पहले सकारात्मक उदारवाद से प्रभावित थे तथा बाद में स्वेच्छातंत्रवादी बने।
        - इसने पहली बार कहा था कि राज्य का एक ही मूल मंत्र है – ''चुप रहो'' (बर्लिन)।

2. मूल्यों की बहुलता संबंधी अवधारणा

- बर्लिन के अनुसार यदि मूल्य कम या नैतिकता के मापदण्ड कम होते हैं तो राज्य की शक्ति बढ़ जाती है तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता कम हो जाती है।
- परन्तु यदि मूल्यों व नैतिकता की बहुलता पाई जाती है तो राज्य की शक्ति कम हो जाती है तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ जाती है।

  नोट – स्वतंत्रता की इकहरी संकल्पना – रॉल्स व मेक्लावेन

  जैसे – विचारकों ने स्वतंत्रता के सकारात्मक – नकारात्मक विभाजन को अस्वीकार किये हैं–

  बर्लिन की अन्य पुस्तकें –

  (1) एशियन थिंकर्स

  (2) कार्ल मार्क्स एण्ड हिज लाइफ

  (3) पर्सलन इम्प्रेसन

  (4) द विको हर्डर

मिल्टन फ्रीडमैन

- पुस्तक - "Capitalism and Freedom" 1962
- स्वतंत्रता का आशय– ''एक व्यक्ति पर उसके सहयोगी/सहचरों व्यक्तियों द्वारा बाह्यता या बल प्रयोग का अभाव।''
- यह स्पेन्सर से प्रभावित होकर 'योग्यतम की विजय' का समर्थन करता है।
- अपनी पुस्तक ''कैपिटलिज्म एण्ड फ्रीडम'' में लिखता है कि 'योग्यता की विजय' और 'नकारात्मक स्वतंत्रता' पूँजीवाद समाज में ही लागू हो सकती है।
- अपनी पुस्तक ''द रूल्स ऑफ मॉनिटरी पॉलिसी'' – फ्रीडमैन (मौद्रिक) नीति में लिखता है कि सरकार को महँगाई या मुद्रा स्फीति नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।
- बाजार की माँग – पूर्ति की शक्ति द्वारा महँगाई अपने आप नियंत्रित हो जाती है।
- स्वतंत्रता (योग्यता) तथा समानता (आरक्षण) परस्पर विरोधी।

  नोट – फ्रीडमैन स्पेन्सर के राजनीतिक, आर्थिक दर्शन का अनुसमर्थक है यानि सरकार असहाय, अनाथ व गरीबों के सामाजिक कल्याण का कार्य न करें।